Indian Streams Research Journal
ISSN 2230-7850
Impact Factor : 2.1506(UIF)
Volume-4 | Issue-2 | March-2014 Available online at www. isrj.net

वर्ग संघर्ष के संकट

Anjali kaistha

Asst.Prof. Dayal Singh college(EVE)

lkjka'k : समाज में जनता के बड़े-बड़े समूहों को वर्ग कहा जाता है। सामान्य रूप में समाज में अनेक वर्ग दिखाई पड़तेहैं-सामंती वर्ग,सर्वहारा वर्ग,पूंजीपति वर्ग,किसान-मजदूर वर्ग,मध्य वर्ग आदि। परंतु मार्क्सवादी उसी समूह को वर्ग मानते हैं जो उत्पादन में एक ही तरहके काम करते हों और जिसके आर्थिक हित एक से हों। अतः इस स्तर पर देखने से ज्ञात होजाता है की दास-व्यवसथा से आज तक समाज में वर्गों के केवल दो ही रूप हुए हैं-एक शासक वर्ग और दूसरा शोषित वर्ग। अन्य सभी वर्ग इन्हीं दो श्रेणियों में समाहित हो जाते हैं।

प्रस्तावना :-

आजकल इन दो बड़े वर्गों के मध्यएक अन्य वर्ग माध्यम वर्ग भी आता है। पूंजीवादी समाज के विकास के साथ इस वर्ग का बहुत विकास हुआ है। वास्तव में इसका एक हिस्सा संपतिशाली होकर शोषक वर्ग में सम्मिलित हो जाता है और दूसरा हिस्सा बेरोजगारी के चुँगल में फँसकर शोषित वर्ग की स्थिति तक पहुँच जाता है। शोषक वर्ग में वे व्यक्ति आते हैं जो दूसरों के श्रम और उत्पादित मूल्यों का उपभोग करते हैं। इसके विपरीत शोषित वर्ग में उन व्यक्तियों को रोक लिया जाता है जो इस अतिरिकतमूल्य के उत्पादन के लिए श्रम के समतुल्य पाए बिना कार्य करने के लिए मजबूर हैं।

मनुष्य ने जब वैयक्तिक सम्पति को इक्कठा करना शुरू किया और अपने लिये अन्यों के श्रम का शोषण शुरू किया,तब से ही वर्ग-संघर्ष शुरू हुआ अब तक के सारे समाज का इतिहास वर्ग-संघर्षका इतिहास रहा है। केवल आदिममानव साम्यवादी था क्योंकि तब सम्पति को किसी के धरोहर नहीं माना जाता था। आदिम समाज का विकास कबीलों के रूप में हुआ और पेट भरने के लिएसामूहिक परिश्रम किया जाने लगा। इस प्रकार सामाजिक काम के बँटवारे ने समाज को दो श्रेणीयों (शोषक और शोषित)में बाँट दिया। शोषक वर्ग शोषितों से काम करवाकरउसका लाभ स्वयं उठाने लगी। यहीं से वर्ग-संघर्षशुरू हुये। मानवों पर अनेक अत्याचार होने लगे और इन्हीं अमानवीय अत्याचारों से ऊबकर शोषितों ने विद्रोह किए और दास-प्रथा का अंत हुआ। प्रत्येक सामाजिक क्रांति ने जहां एक वर्ग संघर्ष के संकट को समाप्त करने का प्रयास किया वहाँ दूसरे वर्ग ने दूसरे प्रकार के वर्ग-संघर्ष के संकटों को बढ़ावा दिया।दास प्रथा का स्थान सामंतवाद ने लेलिया और शोषण का नया रूप उभरा।इसमें एक वर्ग महाजनों,साहूकारों का रहा और दूसरा कृषकदासों का। अगर किसानजमींदारों से एक बार _.k ले लेते थे तो उसकिसान की आने वाली पीढ़ियों तक सिर्फ ब्याज ही चलता रहता था, _.k उतारने का तो सवाल ही नहीं उठता था। इस लूट का सामना करने के लिए किसानों ने विद्रोह कर दिया। इससे किसानों को सामंती व्यवस्था सेकुछ छुटकारा मिला परंतु उसी में से

एक पूंजीपति वर्ग उभर आया। पूंजीपति वर्ग ने किसानों को मजदूरों में बादल दिया क्योंकि पूंजीपतियों को कारखानों में काम करवाने के लिए मजदूरों की आवश्यकता थी। अतः इस पूंजीवादी समाज में भी वर्ग संघर्ष के संकट पूरी तरहसमाप्त नहीं हुए वरन बढ़ते गए।

वास्तव में पूंजीपति वर्ग सदा मजदूर वर्ग का शोषण करता रहता है। परंतु जैसे-जैसे मजदूर वर्ग में जागृति आती है तो वह इस शोषण के विरुद्ध विद्रोह करने लगता है,मजदूर वर्ग का यही शोषण के विरुद्ध विद्रोह धीरे-धीरे वर्ग संघर्ष का रूप धरण करता है। 'समाज में,पूंजीवादी व्यवस्था में,सामाजिक क्रांति व सर्वहारा वर्ग के अधिपत्य के द्वारा,समाजवादी व्यवस्था में ही वर्ग-संघर्ष की समाप्तीहोगी। समाजवादी व्यवस्था में ही वर्गविहीन व राज्यविहीन व्यवस्था लागूहोने पर वर्गों के मध्य शोषण की भूमिका समाप्त हो जाती है। निजी सम्पत्ति,जिसके आधार पर पूंजीपति वर्ग अर्थतन्त्र पर अपना प्रभुत्व कायम करने और मजदूरों का शोषण करने तथा उसके श्रम के फल को हड़प लेने मे सक्षम रहता है,श्रमिकोंके सामाजिक संगठन व उस संपत्ति में अपेक्षित रूप से हिस्सा बांटने में क्रांतिपूर्ण तरीका ही 'निजी संपत्ति' को सार्वजनिक संपत्ति में परिवर्तित करता है।' अतः इस वर्गों के मध्य संघर्ष ही अनेक संकटों को उभारता है। समाज में पूंजीपति वर्ग का पाटन और मजदूरों की विजय दोनों ही समान रूप से अनिवार्य है। वर्ग-संघर्ष के संकट सामाजिक,आर्थिक विकास कीऐतिहासिक सच्चाई है।

रमेश उपाध्याय ने अपने कथा-साहित्य में मजदूर वर्ग के संकटों को चित्रित किया है। 'मिट्टी' कहानी में रमेश उपाध्याय ने रोजी-रोटी की समस्या को कहानी के पात्र के माध्यम से इसकी मजबूरीयों को दर्शाया है। कहानी में एक गरीब मजदूर है जोकि शहर की बस्ती में मिट्टी लाकर बेचता है। परंतु जनसंख्या और मकानों के बढ़ाने के कारण मिट्टी उससे दूर होती जा रही है जिसके कारण वहपरेशान है। इस पर भी लोग उसे उचित दाम नहीं दे रहे हैं तो वह कहता है कि 'मिट्टी आजकल मिलती कहाँ है?चप्पा-चप्पा जमीन पर लोगों ने कब्जा कर रखा है। जहां भी देखिये,मकान-दुकान,बाग-बगीचे,खेत-खलिहान। मिट्टी आप लोगों से दिन-ब-दिन दूर होती जा रही है। काले कोसों चल कर जाता हूँ। तब एक गधा मिट्टी ल पता हूँ। अतः मजदूर के लिए वहबहुत मुश्किल घड़ी होती है जब उसे उसके द्वारा लाईचीज का उचित मूल्य नहीं मिलता जिससे उसके संकट बढ़ जाते हैं। एक दिन जमीन का मालिक उसे पकड़ लेता है। गरीब वर्ग से पूंजीपति वर्ग कदापि ठीक तरह से बात नहीं करता है। जमीन के मालिक के आगे वह मजदूर गिड़गिड़ाता है। परंतु वह उसका फावड़ा ओर गधा रख लेता है। अब उसके ऊपर और संकट आपड़ते हैं। ''जाये तो कहाँजाये?करे तो क्या करे?गधा उसके पास नहीं फावड़ा उसके पास नहीं,टोकरा उसके पास नहीं और खुदा की नेमत मिट्टी भी जमीन के मालिकों की मिल्कियत बन गई है। वह हाथों से भी मिट्टी खोदने को तैयार था,लेकिन डरता था। जमीन का कोई मालिक आकार उसके हाथ भी काट डाले तब?अतः भौतिकवादी समाज में इस तरह गरीब मजदूर का कोई अस्तित्व नहीं है। गारीब मजदूर अपना पेट भरने के लिए क्या नहीं करता। यहाँ तक कि वाहस्वयम तक को बेचने के लिए भी तैयार हो जाता हैऔर सबसे बड़ी विडम्बना तो यही है कि उसके बीवी-बच्चे भी यही चाहते हैं। मजदूर के शब्दों में, "मुझे ही खरीद लीजिये सरकार!मैं खुद मिट्टी हो गया हूँ।"अपने आपको बेचकर भी उसके संकट समाप्त नहीं होते। अतः उसे पापी पेट के लिए कितने प्रयास करने पड़ते हैं।

इस प्रकार 'नशा' कहानी में भी मजदूर की दशा को दिखाया गया है जो कि उच्च अधिकारियों के शोषण का शिकार हो रहा है। वह दिन भर नलसाजी का काम करता है परंतुपूंजीपति लोग उससे किसी प्रकार कि सहानुभूति नहीं रखते हैं। "इस काम में उसका सारा शरीरकीचड़ से लथपथ हो जाता। सर्दियों में उसका शरीर ठंड से

सुन्न हो जाता और गर्मियों में चिलचिलाती धूप उसे झुलसती रहती। गर्मियों कि कटखनीदुपहरी हो चाहे सर्दियों कि शीतल चुभनभरी सुबह, जिस समय मालिक लोग बाहर निकालना भी गवारा न करते,वहआदमी अपने काम में लगा रहता।"इस प्रकार मजदूर दिन भर कड़ी मेहनत करता है लेकिनजबउसके मालिक उसे पानी तक नहीं देते हैं तो वह मालिकों पर अपना रोष प्रकट करने कि बजाय स्वयं को कहता है, "ये बड़े लोग हैं और मैं एक मामूली मजदूर। कीचड़ में लथपथ आदमी को अंदर नहाने कि इजाजत देकर कौन अपना घर और गुसलखाना गंदा करना चाहेगा।"मजदूरों के शब्दों से लगता है कि वह अंदर से कितना दुखी है। परंतु गरीबी के आगे कुछ कह और कर पाने में असमर्थ है अतः वह अपने आपसे हीसमझौता कर लेता है। इसी तरह का 'डाका' कहानी में भी पूंजीपति व्यापारी द्वारा नौकर के शोषण कोदर्शाया है मात्र बारहरुपयों के लिए। रमेश उपाध्याय ने 'दंडद्वीप' उपन्यास में भी राजू के माध्यम से मजदूर वर्ग के संकटों को दिखाया है। राजू ताले-चाबियों के कारखाने में काम करता है। वहाँ प्रतिदिन उसकी तलाशी होती है। "ठहरो यह डिब्बा खोल कर दिखाओ।..... कारखाने के मालिक ने घूर कर देखा तो नंदू ने तांबे के महीन तारों कि छोटी-सी अँटिया डिब्बे से निकाल कर मेज पर रख दी।

देखा साहब लिए जा रहा है जैसे बाप का माल है।'.....बुलाएँ पुलिसको?'

राजू के शब्दों में 'यह तार मैंने नहीं रखा है अपने डिब्बेमें....''तो क्या फरिश्ते रख गए?'

"साहेब हम अपनी आंखो से देखा है राजू को तार लपेटकर डिब्बे रखते हुये।"

अतः कारखाने के मालिकोंका आतंक और अन्याय का वातावरण इस उपन्यास में दिखाया गया है। मध्य वर्ग के समाज का व्यक्ति अर्थ-प्रधान युग की आपाधापी में धन के प्रति अधिक आसक्त दिखाई देता है। इसे रमेश उपाध्याय ने 'बदलाव से पहले' कहानी में स्वदेश के माध्यम से दिखाया। स्वदेश मध्यवर्गीय परिवार से संबन्धित है। आर्थिक कठिनाइयों का जी तोड़ मुक़ाबला कर रहा है। परंतु उसकी पत्नी फिर भी खुश नहीं है। स्वदेश के शब्दों में, "मुझे तीन रूपयेरोज ही मिलते हैं न?उनमें से भी एक-डेढ़ तो काम के लिए ही जाने-आने में हीखर्चहो जाता है..... यह सोच कर उनके मन में बहुत रोष आता है कि आदमी की नियति क्या है मात्र पैसा। जिस तरह टाइपराइटर पर कागज बदला जाताहै-क्या इसी तरह ज़िंदगी को नहीं बदला जा सकता?उतर में जाने कब,जाने किसके द्वारा किया गया एक प्रश्न याद आ गया-आप क्या कर रहे हैं उसे बदलने के लिए?और अपना उत्तर भी,हम?क्या करें?जितना बन पड़ता है,संघर्ष कर रहे है,मगर देखते हैं कि हमारा साथ देने वाला कोई नहीं है।"अतः आदमी की दान पाने की लालसा कदापि खत्म नहीं होती। इस बात को रमेश उपाध्याय यहाँ स्पष्ट करना चाहते हैं। अपनी सारी ज़िंदगी और ज्यादा धन को पानेकी कोशिश में लगता है। परंतु घर के सदस्य –बीबी और बच्चे संतुष्ट नहीं होते। इससे स्वदेश के संकट घटने की बजाय बढ़ते चले जातेहैं। ऐसी स्थिति'कहाँ हो प्यारेलाल' कहानी में प्यारेलाल की है। जोकि महंगाई के बढ़ने से परेशान है। प्यारेलाल बताता है-"मैं नौकरी करता हूँ,पूरे परिवार का पालन-पोषण करता हूँ,जितना बन पड़ता है,घर का काम भी कारता हूँ। माँ-बाप,बीबी-बच्चोंको जान से ज्यादा प्यार करता हूँ। किसी पे हाथ उठाना तो दूर,डांटने के लिए आवाज़ भी ऊंची नहीं करता। फिर भी सब लोग मुझ पर ही रोब गाँठते है। .....परिवार में सभी को मुझसे यह शिकायत है कि मैं ऐसी छोटी नौकरी क्यों करता हूँ,जिसकी तनखा से इतनी किफायत है के बावजूद काम नहीं चलता।चाहते हैं कहीं घूस देकर मैं कोई ऐसी नौकरी पकड़ लूँ,जिसमें अनाप-शनाप ऊपरी आमदनी हो।.....मेरा बोलना ही किसी को सुहाता नहीं। जैसे मैं आदमी नहीं,उनके लिए पैसा कमाने कि मशीन भर हूँ।"आज मध्य वर्गीय परिवार के मुखिया के लिए महंगाई का सामना करना बहुत मुश्किल हो ज है। इसी स्थिति को लेखक ने 'प्यारेलाल' के माध्यम से दिखाया है। उसे घर के वातावरण में ही

घुटन होतीहै। वह दिन-रात मेहनत करता है परंतु किसी को उसकी मेहनत कि परवाह नहीं है। इससे उसके संकट बढ़ जाते हैं।

बेरोजगारी और मेहनत के कारण निम्न और मध्यम-वर्ग मैं बेचैनी और दुराशा बढ़ी है। समाज में निम्नवर्ग के बच्चे बचपन से हिइन संकटों का सामना करते हैं। 'चक्रबद्ध' उपन्यास का पात्र बचपन से ही इस यंत्रणा को भोग रहा है। "कभी माँ एक रुपया भी न जुटापाती औरमैं भूख से रोता चिल्लाता,पावन भैया खूब ज़ोर से चिल्लाकर खाना मांगते थे,अम्मा मुझे समझाया करती थी-पावन तो पागल है,इसलिए चिल्लाता है,नहीं तो कोई खानेके लिए कोई रोता-चिल्लाता है?पिता जी को देख,कुछ कहा उन्होने?चुपछाप सो गए। मुझे देख,जीजी को देख,सिर्फ दो-दो बताशे खाएहै,तुझे तो बताशे भी ज्यादा मिले थे-चमन के हिस्से के-।"इस उपन्यास में बेरोजगारी से परेशान निम्न मध्यवर्गीय परिवार को दर्शाया गया है। अभी बच्चे अपने बचपन के सुख भी पूरी तरह झेल नहीं पाएहोते हैं कि उन्हें सामाजिक,आर्थिक संकटों का सामना करना पड़ जाता है। इसी कारण उनका मानसिक स्तरऊँचानहीं उठ पता है। देश जब परतंत्र था उस समय बेचैनी इतनी अधिक नहीं थी,जितनी अब दिखाई दे रही है।

समाज के पूंजीपति स्वार्थ-साधन और शोषणकार्य करने में मग्न हैं। किन्तु सरकार ने किसानों को,निम्न मध्यवर्गीय लोगों को,मजदूरों को,महाजनों के कर्ज़ और ब्याज के शिकंजे से छुड़ाने के लिए कानूनमें विभिन्न प्रकार के सुधार किए हैं,जिससे किसानऔर मजदूर वर्ग सुखी हो सके और उनके संकट कम होने में मदद मिल सके परंतु आज भी समाज में शोषक और शोषित वर्ग के बीच संघर्ष दिखायी देते हैं। हर देश और जातिके लोग अपनीसांस्कृतिक मान्यताओं के आधार पर विवाह के बारे में सोचते हैं। समाज के अस्तित्व के लिए विवाह जरूरी है। विवाह के साथ दहेज एक पारंपरिक प्रथा रही है,किन्तु आज उसका रूप इस हद तक विकृत हो गया है की वह रूढ़ि न रह कर समस्या बन गई है। यह समस्या निम्न और उच्च वर्ग कीअपेक्षामध्यवर्ग की बहुत ही त्रासदयकरही है। परंतु यह सही है कि मध्यवर्ग अपनी झूठी मर्यादा के कारण त्रस्त था। झूठी प्रतिष्ठा कि आड़ में यहवर्ग झुलस रहा था। मध्यवर्ग का अहम न तो उन्हे निम्न वर्ग से मिलने देताथा न असुविधाओं का अभाव उच्च वर्ग के स्तर को प्राप्त क्र सकता था। "इतना दान-दहेजदिया,लूटली नामवरी। फिर क्या हुआ?"बेटी के घर से तो ससुराल वाले हमेशाचाहतेंहैं कुछ न कुछ!ब्याह में इतनासब दिया,किया,बाद में खीसे-नपोर दिये। खुल गई कलई।"अतः इस उपन्यास में दहेज प्रथा कि समस्याको उठाया गया है। परिवार का मुखिया समाज में झूठी प्रतिष्ठा बनाए रखने के लिए बहन कि शादी में दहेज के लिए घर गिरवी रख देता है और बैंक में चोरी के इल्ज़ाम लग जाने से जेल में चला जाता है जिसके कारण उसके घर पर अनेक संकट आ पड़ते हैं। शैक्षणिक दृष्टि से आज का समाज चाहे कितना ही उन्नत क्यों न हो गया हो दहेज प्रथा के कारण पीछे है। निरंतर बढ़ती हुई विकराल महंगाई में भी दहेज प्रथा विकराल होती जा रही है। इसका प्रमुख कारण एक ओर हमारे विकृत संस्कार हैं,जो गहरी जड़ें पकड़े हुए हैं,तो दूसरी ओर भौतिकतावादी दृष्टि। अनमेल विवाह,पारिवारिक कलह इसी दहेज के विकसित रूपहैं।

रमेश उपाध्याय के कथा-साहित्य में वर्णित वर्ग-संघर्ष के संकट मजदूरों और मध्यवर्गीय,निम्नवर्गीय के साथ-साथ जमींदारों और किसानों के मध्य भी वियमान है। 'बराबरी का खेल'कहानी में जमींदारों द्वारा किसानों के शोषण को दिखाया गया है। परंतु अंत में किसानों में भी जमींदारों के प्रति विद्रोह के भाव उठ जाते हैं। स्वतन्त्रता से पहले भीऔर स्वतंत्रता के बाद भी किसान जमींदारों के शोषण से परिचित थे परंतु चाहकर भी कुछ नहीं कर सकते थे। गाँव का जमींदार समाजवाद के नाम पर किसानों को लूटता है। वह दस के नोट को दिखाकर गरीब मजदूर किसानों से बोरोंको उठवाकर गोदाम में रखवा लेता है। बुधना,रविदत्त,महमूदा आदि राजा बाबू की चाल से

परिचित हैं। बुधना कहता है, "यह खेल नहीं है पंडित,फोकट मे काम लेने का एक नया तरीका है।"महमूदा को मसखरी सूझती है, "भागकर आए थे कि भट्टी में तापने और लोहा कूटने से बचेंगे यहाँ साली बेगार गले पड़ गई।"सुमेरा तिलमिलाता है, "अरे बेगार करानी है तो साफ कहें कि बेगार करो। समाजवाद को क्यों बदनाम करतेहैं।" और इसके आगे वह लोग राजा बाबू के आगे बोलने लगते हैं। रविदत्ता कहता है, 'हमको हमारी मजूरी चाहिए।'

मजूरी पाँच रूपये प्रति व्यक्ति के हिसाब सेपच्चीस रूपये।

लेकिन खेल कि मजूरी की बात कहाँ से आ गई रविदत्त जी?

'एक सौ दस बोरे उठाकर रखने खेल नहीं है राजा बाबू,बुधना बोलता है।'

'हाँ मालिक ढोते-ढोते जान निकाल गयी है।' महमूदा

'इतनी तेज धूप में सीमेंट के फर्श पर बोरा लेकर चलनाकैसा होता है। दुपहरी में कभी आप नंगे पाँव हवेली का आँगन पार करके देखिये।' बुधना

'हाँ सरकार जूते तो हम लोगों ने यहाँ बैठक में आने से पहले ही खोल दिये थे' सुमेरा

'और गोदाम की गर्मी में चार घंटे लगे रहना भी खेल नहीं होता राजा बाबू।'

महेशचन्द्र।

कमाल है सब लोग बोल रहें हैं और राजा बाबू के खिलाफ। मोढ़ोपर बैठे हुये लड़कों को विश्वास नहीं होता। राजा बाबू ज़ोर से डांटते है, 'खामोश। देख रहा हूँ,बड़ी लंबी जीभ निकाल आई है तुम लोगों की। मजूरी करने के लिए तुमसे किसने कहा था?बात खेल की थी। तुम लोगों को नहीं खेलना था तो पहले ही माना कर देते यह तो तय नहीं हुआ था कि .....। समाज में भी आज भी जमींदारों का बोलबाला है। वे जब और जैसे चाहें मजदूर कृषकोंको लूट सकते हैं। जब चाहें अत्याचार कर सकते हैं। कठोर परिश्रम करने वाले किसानों को उसकी मजदूरी नहीं दी जाती है। इसके पीछे जमींदार शोषकों के हाथ होता है। रमेश उपाध्याय ने शोषकों के शोषितों पर अत्याचारों को 'बराबरी का खेल' कहानीमें पात्रों के माध्यमसे प्रतीकात्मक ढंग से अभिव्यक्त किया है। रमेश उपाध्याय के कथा-साहित्य में नारी का चित्रण भी हुआ है। नारी की यथार्थ स्तिथि को अभिव्यक्त करते हुये लेखक ने उसके प्रति सहानुभूति का दृष्टिकोण अपनाया है। नारी भी शोषित वर्ग का ही एक हिस्सा है। अनेको स्थानो पर रमेश उपाध्याय ने कथा-साहित्य में मजदूर नारियो की मानसिक स्थिति का चित्रण किया है। 'स्वपनजीवी' उपन्यास में सावित्री के माध्यम से उसकी स्थिति पर्दर्शित होती है। "शिबू भाई रोज का काम दिला दो तो अपनी पगार में से दो रुपये रोज आप को दे सकती हूं पैसो की बहुत जरुरत रहती है और महीने में दस दिन भी ठीक से काम नहीं मिल पाता|" वस्तुतः नारी जाति का गहनतम शोषण आर्थिक आधार पर हुआ है। अधिकतर भारतीय स्त्रियां दुहरा शोषण सहती है। एक और तो वे पूंजीवादी आर्थिक परिस्थितियों के कारण शोषित वर्गों के पुरुषों के साथ ही शोषण का शिकार बनती है,दूसरी और अपने परिवार के पुरषों-पिता और पति के द्वारा अतिरिक्त रूप से शोषत हो जाती है| इस स्थिति को रमेश उपाध्याय ने 'अग्निसंभवना' कहानी में नारी पात्रा के माध्यम से दिखाया है। जिसका पति उसके पिता के मंत्री पद से हट जाने पर अत्याचार करता है। " पिता जी मंत्री नहीं रहे तो मेरे उद्योगपति में एक और परिवर्तन आया| पहले वह बच्चा नहीं चाहता था, अब उसे जल्दी से जल्दी बच्चा पैदा करने कि धुन सवार हो गयी| पहले वह गर्भ निरोधको पर बहुत जोर दिया करता था ...। लेकिन अब रोज रात को तन और मन दोनों से नितांत नंगा होकर मुझे रोंदने लगा| बच्चा मैं भी चाहती थी, कियोकी घर में अकेली पड़ी बोर होती रहती थी,लेकिन उसके व्यवहार से मुझे लगता कि वह केवल बच्चा नहीं, कुछ और भी चाहता है। मेरे प्रति अपनी तमाम कोमलता छोड़कर वह एकदम जंगली बन

गया था बुरी तरह नोचता कचोटता और ऐसे आक्रमण करता, जैसे मुझे पीस कर नष्ट कर देगा। उन क्षणों में मुझे लगता, पिताजी का मंत्रित्व समाप्त होने से इसे जो नुक्सान हुआ हुआ है उसका बदला यह मुझे विरूप करके लेना चाहता है। मैं उससे बचने कि कोशिश करती, लेकिन वह मुझे न छोड़ता।लाश की तरह ठंडी पड़ी रहती,तब भी नहीं। गर्भ के दिनों में भी वह राक्षस मुझे नहीं छोड़ता था। मेरे गुस्से की तो उसे कोई परवाह रह ही नहीं गयी थी,मेरे रोने गिड़गिड़ाने का भी उस पर कोई असर नहीं होता। मुझे लगता,मुझ पर रोज बलात्कार होता है। मेरा सब कुछ नष्ट हो गया है। मैं अब मैं नहीं,उन लाखों-करोड़ों औरतों में से एक हो गई हूँ,जो पापी पेट की स्थिति को इस कहानी के माध्यम से दिखाया है। ऐसी ही स्थिति 'दरम्याना सिंह' कहानी में मीनाक्षी की दिखाई गई हैजो कि पहले अपने मित्र और फिर पति के अत्याचार को सहन करती है। यह सत्यहै कि समाज में 'नारीवर्ग' सदैव उपेक्षित वर्ग रहा हैतथा अनेक संकटों का सामना भी किया है। उपेक्षित जीवन तथा शोषण से आक्रांत नारी वर्ग में नवयुग चेतना का उन्मेष हुआ। प्रेमचंदरोत्तरकाल से ही नारी स्वातंत्र्यके प्रश्नों को लेकर संघर्ष क्षेत्र में उपस्थित हुई तथा वर्ग संघर्ष का कारण बनी। यह कहना अतियुक्तिपूर्ण न होगा कि "भारतीय समाज में नारी वर्ग ही सर्वाधिक पीड़ित वर्ग रहा है।

अंततः कहा जा सकता है कि शासक वर्ग नाना रूपोंमें मजदूरों,किसानों और स्त्रियॉं का शोषण करता रहा है। कहीं निम्नवर्गों की स्त्रियॉं का शोषण करके,तो कहीं उससे बेगार करवाके,व कहीं उसे पूर्ण आर्थिक सहायता न देकर। जिससे उनके संकट बढ़ जाते हैं अतः रमेश उपाध्याय ने कथा-साहित्य में इन वर्ग संघर्ष के संकटों को दिखाने का प्रयास किया है।

संदर्भ ग्रंथ :

1. ओमवाती सक्सेना,मार्क्सवादी चेतना परक हिन्दी उपन्यास,पृ०45-46।
2. रमेश उपध्याय,किसी देश के किसी शहर में,पृ०87,91,128 ।
3. रमेश उपध्याय, 'दण्डद्वीप',पृ०44-45 ।
4. रमेश उपध्याय,बदलाव से पहले,पृ०74-75,115,122-123 ।
5. रमेश उपध्याय,चतुर्दिक,पृ० 126 ।
6. रमेश उपध्याय,कहाँ हो प्यारेलाल,पृ०26 ।
7. रमेश उपध्याय, 'चक्रबद्ध',पृ०93 ।
8. रमेश उपध्याय,'स्वप्नजीवी',पृ०53 ।
9. चंडी प्रसाद जोशी,हिन्दी उपन्यास का समाजशास्त्रीय अध्ययन,पृ०113